दैनिक भास्कर
19-Dec-2019
Page 6

साहित्य अकादमी सम्मान • डिबडीह के कुमार मनीष अरविंद को मिला मैथिली भाषा का साहित्य अकादमी सम्मान

वन अफसर रहते हुए जल, जंगल और जीवों से लिखने की प्रेरणा मिली, मेरा काम साहित्य में प्रतिबिंबित होता है : कुमार मनीष

रांची | कुमार मनीष अरविंद कुशल और दृष्टि संपन्न कवि हैं। मैथिली के भी, हिंदी के भी। वे भारतीय वन सेवा के सक्षम-संवेदनशील अधिकारी हैं। संप्रति मेदिनीनगर में वन संरक्षक के पद पर आसीन हैं। रांची के अशोक आश्रम, डिबडीह में रहने वाले कुमार मनीष अरविंद की 10 किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें छह मैथिली और चार हिंदी में हैं। 'जिनगीक ओरिआओन करैत' के लिए उन्हें इस साल का मैथिली भाषा में साहित्य अकादमी सम्मान देने की घोषणा हुई है। उनकी रचनाएं पर्यावरण संरक्षण, पशु प्रेम पर ही आधारित रहती हैं। सम्मान की घोषणा के बाद **कुंदन कुमार चौधरी से उनकी हुई बातचीत के अंश...**

'जिनगीक ओरिआओन करैत' के लिए उन्हें इस साल का मैथिली भाषा में साहित्य अकादमी सम्मान देने की घोषणा हुई है

पुरस्कार मिलने से दायित्व आ जाता है

साहित्य अकादमी मिलने के बाद काफी आनंदित हो रहा हूं। मैंने कभी सोचा नहीं था कि इतना बड़ा पुरस्कार मिलेगा, मन में इच्छा तो रहती है, अचानक मिल जाता है तो मन आह्लादित हो जाता है। पुरस्कार से प्रेरणा मिलती है, अब और लिखने की जिम्मेबारी मिल गई, एक दायित्व आ गया कि अच्छे से अच्छा लिखूं। गुणवत्ता बनी रहनी चाहिए।

कुमार मनीष

14-15 साल की उम्र से लिख रहा हूं

मेरा साहित्यिक सफर 14-15 साल की उम्र में शुरू हुआ। अभी 55 साल का हूं। 40-42 वर्ष हो गए मुझे लिखते हुए। घरवालों का इसमें पूरा सपोर्ट रहा। मेरे पिताजी जितेंद्र मिश्र 'जीवन' पटना में आर्यावर्त अखबार के संपादक रहे हैं। घर में लिखने-पढ़ने का माहौल रहा। मुझे भी पिताजी से ही लिखने की प्रेरणा मिली।

जीवन व्यवस्था सिखाती है किताब

'जिनगीक ओरिआओन करैत' का अर्थ है जीवन की व्यवस्थाएं करना। 120 पेज की इस किताब में मैथिली की 56 कविताएं हैं। मुख्य बातें पर्यावरण संरक्षण की ही हैं। इसके अलावा जीवन क्षेत्र में जो विसंगतियां हैं, उन पर टिप्पणी की गई हैं।

वनों से ही मिलती है प्रेरणा

मेरे साहित्य में 70 प्रतिशत चीजें वन्य जीव, पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण से बचाव, धरती को बचाने की चीजें ही मिलेंगी। एक वन संरक्षक का जो मेरा काम है, वही मेरे साहित्य में भी प्रतिबिंबित होता है।

पुरस्कार पाने के लिए साहित्य न रचें

नए लेखक जो आ रहे हैं, उनसे यही कहना चाहता हूं कि साहित्य सृजन पुरस्कार पाने के लिए न करें। आप बराबर ईमानदारी से लिखते रहें, समाज के प्रति आपका बड़ा उत्तरदायित्व है। नई चीजें सीखें और उसे अपने रचनाकर्म में शामिल करें।

दैनिक भास्कर
19-Dec-2019
Page 5

रांची के वन सेवा अफसर मनीष को मैथिली के लिए साहित्य अकादमी

चाईबासा में पढ़े हेंब्रोम को संथाली का अकादमी पुरस्कार

कल्चरल रिपोर्टर | रांची

वन सेवा के अफसर रांची के कुमार मनीष अरविंद और चाईबासा में पढ़े-लिखे ओडिशा के कालीचरण हेंब्रोम को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिलेगा। मनीष को उनके मैथिली कविता संग्रह जिनगीक ओरिआओन करैत और कालीचरण को संथाली कहानी संग्रह सिसिरजली के लिए फरवरी में दिल्ली में सम्मानित किया जाएगा। कालीचरण ने टाटा कॉलेज चाईबासा से स्नातक किया है। फीचर फिल्म जीवीजुरी के अलावा उन्होंने कई नाटक भी लिखे हैं। डिबडीह रांची के मनीष पलामू में वन अधिकारी हैं। उनकी शिक्षा-दीक्षा बिहार में हुई है। वो हिंदी और मैथिली में कविता और कहानी समान रूप से लिखते हैं। हिंदी में और कितनी यातनाएं, क्यों जंगल स्तब्ध खड़ा है उनके काव्य संग्रह हैं। जबकि मैथिली में जिगनीक...के अलावा मिझायल सूर्यक नगर, निछच्छ वती भेल कविता, तो चियांकी राज बाबा कहानी की किताब है।

मनीष अरविंद

कालीचरण हेंब्रोम

मनीष अरविंद को मैथिली का साहित्य अकादमी पुरस्कार

मनीष अरविंद (बाएं) शशि थरूर (दाएं)। ● जागरण आर्काइव

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली : राजनेता और लेखक शशि थरूर और नाटककार नंद किशोर आचार्य समेत 23 लेखकों को इस वर्ष के साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए चुना गया है। 24 फरवरी को दिल्ली में ताम्र पत्र और एक लाख के नकद पुरस्कार के साथ सम्मानित किया जाएगा। बुधवार को साहित्य अकादमी ने इन नामों की घोषणा की। कांग्रेस नेता शशि थरूर को उनकी अंग्रेजी पुस्तक 'एन इरा ऑफ डार्कनेस' के लिए पुरस्कृत किया जा रहा है। नंद किशोर आचार्य को उनकी हिंदी कविता 'छीलते हुए अपने को' के लिए यह पुरस्कार दिया जा रहा है। वहीं मनीष अरविंद को मैथिली के लिए पुरस्कार दिया जाएगा। अकादमी के सचिव के श्रीनिवास राव ने बताया कि साहित्य अकादमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबर की अध्यक्षता में इन पुरस्कारों का प्रस्ताव निर्णायक मंडल और साहित्य अकादमी के कार्यकारी बोर्ड द्वारा रखा गया।

इनमें सात कवि फुकन चंद्र बसुमतारी (बोडो), निलबा खांडेकर (कोंकणी), मनीष अरविंद (मैथिली), वी मधुसूदन नायर (मलयालम), अनुराधा पाटिल (मराठी), पेन्ना मधुसूदन (संस्कृत) व उपन्यास लेखन के लिए जयश्री गोस्वामी महंत (असमिया), एल बिरमंगल सिंह (मणिपुरी), चो. धर्मन (तमिल) और बंदि नारायण स्वामी (तेलुगु) को यह पुरस्कार मिल रहा है। वहीं, विजया (कन्नड़) और शफी किदवई (उर्दू) को उनके रचनात्मक गैर-कथा साहित्य, आत्मकथा व जीवनी पर लेखन के लिए पुरस्कृत किया जा रहा है। निबंध लेखन

सम्मान

कविता संग्रह के लिए मिला मैथिली साहित्य अकादमी पुरस्कार

संवेदनाओं को शब्द देते रहे हैं कुमार मनीष अरविंद

तेजेस्कर पांडेय • पूर्णिया

इस वर्ष मैथिली साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए चयनित कुमार मनीष अरविंद की कविताओं में उनका प्रकृति प्रेम स्पष्ट रूप से दिखता है। जल, जंगल, जमीन और पहाड़ के साथ आदिवासी और वंचित समूह की संवेदनाओं को शब्द देने वाले मनीष भारतीय वन सेवा के अधिकारी हैं। वर्तमान में वह पलामू में प्रादेशिक अंचल के वन संरक्षक के रूप पर तैनात हैं।

सुपौल जिले के बसावनपट्टी के मूल निवासी कुमार मनीष अरविंद मैथिली के महत्वपूर्ण रचनाकार हैं। जिनगीक ओरिआओन करैत कविता संग्रह के लिए उन्हें 2019 का मैथिली साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया है।

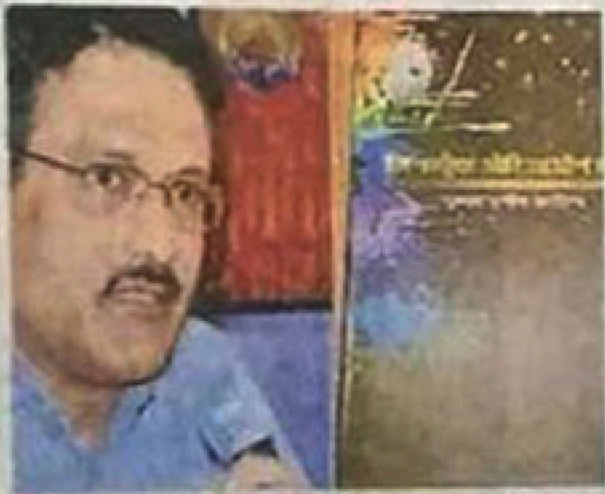

अपनी लिखी किताब के साथ मनीष अरविंद। • जागरण आकाईव

उनका जन्म 15 अक्टूबर 1964 को हुआ था। शुरुआती शिक्षा के बाद सायंस कॉलेज, पटना से स्नातक किया और वहीं से वानिकी में परास्नातक की डिग्री हासिल की। उसके बाद एफआइआइ डीम्ड यूनिवर्सिटी, देहरादून से ऑनर्स डिप्लोमा इन फॉरेस्ट्री की की। इसके बाद वाइल्ड लाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया देहरादून से ऑनर्स डिप्लोमा इन वाइल्ड लाइफ मैनेजमेंट का कोर्स किया। प्रकृति से प्रेम उन्हें भारतीय वन सेवा की तरफ ले आया।

मैथिली की पहली किताब मिझायल सूर्यक नगर (कविता संग्रह) किशुन संकल्प लोक, सुपौल से 2001 में प्रकाशित हुई। इसके पूर्व हिंदी में उनका कविता संग्रह और कितनी यातनाएं 1995 में आ चुकी थी। मैथिली और हिंदी में अभी तक उनकी दस किताबें आ चुकी हैं। मैथिली की नई धारा के कवि मनीष अरविंद कथाकार और संस्मरण लेखक भी हैं। वे साहित्य अकादमी के परामर्शदातृ समिति के सदस्य भी हैं। उन्होंने कई किताबों का संपादन किया है। इन्हें मैथिली सृजन सम्मान, यात्री पुरस्कार, कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान से भी नवाजा गया है।

आज का दिन 1919 में अमेरिका में मौसम विज्ञान सोसायटी की स्थापना।

नंद किशोर व शशि थरूर को साहित्य अकादेमी सम्मान

नई दिल्ली। हिंदी के कवि नंद किशोर आचार्य और कांग्रेस नेता व अंग्रेजी के लेखक शशि थरूर समेत 23 लेखकों को इस साल के साहित्य अकादेमी पुरस्कार से नवाजा जाएगा। अकादेमी ने बुधवार को इसकी घोषणा की।

थरूर को कथेतर गद्य 'एन इरा ऑफ डार्कनेस' जबकि आचार्य को उनकी कविता 'छीलते हुए अपने को' के लिए पुरस्कृत किया जाएगा। पुरस्कार एक जनवरी 2013 से 31 दिसंबर 2017 के दौरान पहली बार प्रकाशित पुस्तकों को दिया जाना है। पुरस्कार 25 फरवरी 2020 को दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में दिए जाएंगे। अकादेमी इसके तहत एक उत्कीर्ण ताम्रफलक, शॉल व एक लाख रुपये की राशि प्रदान करेगी।

› भाषण से प्रेरणा पेज 11

अपने भाषण से मिली किताब की प्रेरणा

साहित्य अकादेमी

नई दिल्ली | एजेंसी

कांग्रेस नेता व अंग्रेजी के लेखक शशि थरूर को जिस किताब के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार से नवाजा जाएगा, उसकी नींव ईस्ट इंडिया कंपनी पर उनके भाषण से तैयार हुई थी।

ऑक्सफोर्ड यूनियन में दिए इस भाषण की भारत समेत कई देशों में सराहना हुई थी। थरूर की किताब में इस भाषण से जुड़े कई पहलू शामिल हैं। शशि थरूर को उनकी किताब 'एन इरा ऑफ डार्कनेस' के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। वर्ष 2016 में प्रकाशित यह किताब भारत में ब्रिटिश राज पर आधारित है। इस किताब की चर्चा पूरी दुनिया में हुई थी। भारत और ब्रिटेन में इस किताब के दो अलग-अलग वर्जन प्रकाशित किए गए थे। ब्रिटिश वर्जन की शुरुआती 50 हजार प्रतियां छह महीने में बिक गई थीं।

दोस्त ने दिया किताब लिखने का सुझाव : मई, 2015 में शशि थरूर को ऑक्सफोर्ड यूनियन में ब्रिटिशकाल पर विचार व्यक्त करने के लिए बुलाया गया था। तब उन्होंने कुछ ऐसा भाषण दिया, जिसकी चर्चा दुनियाभर में हुई। किताब में वर्ष 1600 से 1947 तक के इतिहास का जिक्र है।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिलना मेरे लिए गर्व की बात है। कोई भी सम्मान या पुरस्कार संबंधित व्यक्ति को उसके कार्यों की याद दिलाता है। मुझे खुशी है कि साहित्य अकादेमी ने मेरे लेखन को सम्मान के लायक समझा।
-शशि थरूर, कांग्रेस नेता व लेखक

राजनायिक से नेता बने

- **09** मार्च, 1956 को जन्में शशि थरूर पूर्व भारतीय राजनयिक हैं
- **2006** में संयुक्त राष्ट्र के महासचिव पद के लिए चुनाव भी लड़ा
- संयुक्त राष्ट्र में कई अहम पदों पर रहे, वर्ष 2007 में पद छोड़ा, मार्च 2009 में केरल के तिरुवनंतपुरम से कांग्रेस पार्टी के टिकट पर चुनाव जीता।

19 किताबें लिख चुके हैं

शशि थरूर अभी तक कुल 19 किताबें लिख चुके हैं। इनमें 'एन इरा ऑफ डार्कनेस' के अलावा 'मैं हिंदू क्यों हूं?' और द पैराडॉक्सीकल प्राइम मिनिस्टर, नेहरू : द इन्वेंशन ऑफ इंडिया जैसी किताबें शामिल हैं।

सम्मान न पाने वाले कम महत्वपूर्ण नहीं

पुरस्कार

नई दिल्ली | प्रमुख संवाददाता

साहित्यकार नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि साहित्य अकादेमी सम्मान का अपना सामाजिक महत्व होता है। सम्मान मिलता है तो अच्छा लगता है। मगर, जिन्हें सम्मान नहीं मिला, उनका साहित्य कम महत्वपूर्ण नहीं है।

नंदकिशोर को उनकी कविता संग्रह 'छीलते हुए अपने को' के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। पुरस्कारों की घोषणा के बाद उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि सम्मान लेखक के साहित्यिक महत्व को ठीक से रेखांकित करते होंगे। बहुत बार अधिक महत्वपूर्ण लेखक बिना सम्मान के भी रह जाते हैं। यह एक प्रक्रिया है, जिसका नंबर आ गया, उसका चयन सम्मान के लिए हो जाता है। नंदकिशोर ने कहा कि उनकी कविता संग्रह में सभी तरह की कविताएं हैं। उनका मानना है कि कोई भी कविता हो, वह मनुष्य के आंतरिकीकरण की प्रक्रिया होती है।

खास बातें

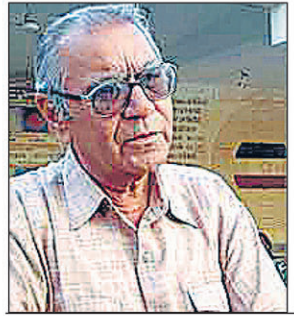

लेखन में जीवन के हर पहलू की झलक

- नंदकिशोर आचार्य का जन्म 1 अगस्त 1945 को राजस्थान के बीकानेर में हुआ
- वर्तमान में वह जयपुर में रहते हैं, उनका लेखन में जीवन के हर पहलू की झलक मिलती है
- राजस्थान साहित्य अकादेमी के सर्वोच्च मीरा पुरस्कार से भी सम्मानित हो चुके हैं

प्रमुख रचनाएं

- तथागत (उपन्यास)
- रचना का सच और सर्जक का मन (आलोचना),
- देहांतर और पागलघर (नाटक)
- वह एक समुद्र था, शब्द भूले हुए, आती है मृत्यु (कविता संग्रह)।

नंदकिशोर आचार्य व शशि थरूर को साहित्य अकादेमी पुरस्कार

मृणाल वल्लरी
नई दिल्ली, 18 दिसंबर।

साहित्य अकादेमी ने हिंदी के लिए नंदकिशोर आचार्य, अंग्रेजी के लिए सांसद डॉ. शशि थरूर, उर्दू के लिए प्रो. शाफे किदवई और पंजाबी भाषा के लिए किरपाल कजाक समेत 23 भारतीय भाषाओं के रचनाकारों को 2019 का अकादेमी पुरस्कार देने का बुधवार को एलान किया। प्रेस को जारी बयान में साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने बताया कि सात कविता-संग्रह, चार उपन्यास, छह कहानी-संग्रह, तीन निबंध संग्रह, एक-एक कथेतर गद्य, आत्मकथा और जीवनी के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार घोषित किए गए हैं।

नंदकिशोर आचार्य

शशि थरूर

पुरस्कारों की अनुशंसा 23 भारतीय भाषाओं की निर्णायक समितियों द्वारा की गई। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में आयोजित अकादमी के कार्यकारी मंडल की बैठक में इन्हें अनुमोदित किया गया। श्रीनिवासराव ने बताया कि हिंदी में नंदकिशोर आचार्य को उनके कविता संग्रह 'छीलते हुए अपने को' के लिए प्रतिष्ठित बाकी पेज 8 पर

नंदकिशोर आचार्य व शशि थरूर को साहित्य अकादेमी पुरस्कार

पेज 1 का बाकी

पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। अंग्रेजी में कथेतर गद्य 'एन एरा ऑफ डार्कनेस' के लिए थरूर को साहित्य अकादेमी पुरस्कार से नवाजा जाएगा। थरूर कांग्रेस नेता हैं और केरल की तिरुवनंतपुरम सीट से लोकसभा सदस्य हैं। राव के मुताबिक, 'सवनेह-सर सैयद : एक बाजदीद (जीवनी) के लिए शाफे किदवई को पुरस्कृत किया जाएगा। इसके अलावा, असमिया में जयश्री गोस्वामी महंत को 'चाणक्य' (उपन्यास), मणिपुरी में बेरिल थंगा (एल. बिरमंगल सिंह) को 'ई अमादी अदुनगीगी ईठत' (उपन्यास), तमिल में चो. धर्मन को 'सूल' (उपन्यास), और तेलुगु में बंदि नारायणा स्वामी को 'सेप्ताभूमि' (उपन्यास) के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार दिया जाएगा। श्रीनिवासराव ने कहा कि बोडो में फुकन चंद्र बसुमतारी को 'आखाइ आथुमनिफ्राय' (कविता), कोंकणी में निलबा आ. खांडेकार को 'ध वड्र्स' (कविता), मैथिली में कुमार मनीष अरविंद को 'जिनगीक ओरिआओन करैत' (कविता), मलयालम में वी. मधुसूदनन नायर को 'अचन पिरन्ना वीदु' (कविता), मराठी में अनुराधा पाटील को 'कदाचित अजूनही' (कविता), संस्कृत में पेन्ना-मधुसूदन को 'प्रज्ञाचाक्षुषम' (कविता) के लिए पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

कहानी संग्रह के लिए अब्दुल अहद हाजिनी (कश्मीरी) को 'अख याद अख कयामत', तरुण कांति मिश्र (ओड़िया) को 'भास्वती', किरपाल कजाक (पंजाबी) को 'अंतहीन', रामस्वरूप किसान (राजस्थानी) को 'बारीक बात', काली चरण हेम्ब्रम (संथाली) को 'सिसिरजली', ईश्वर मूरजाणी (सिंधी) को 'जीजल' के लिए सम्मानित किया जाएगा। बांग्ला में 'घुमेर दरजा थेले' (निबंध) के लिए चिन्मय गुहा को, डोगरी में 'बंदरालता दर्पण' (निबंध) के लिए ओम शर्मा 'जंद्रयाड़ी' को, गुजराती में 'मोजमा रे' वुं रे!' (निबंध) के लिए रतिलाल बोरीसागर को, कन्नड़ में विजया को 'कुड़ी एसारू' (आत्मकथा) के लिए पुरस्कार दिया जाएगा।

श्रीनिवासराव के मुताबिक इन पुस्तकों को संबंधित भाषा के त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल ने निर्धारित चयन-प्रक्रिया का पालन करते हुए पुरस्कार के लिए चुना है। नियमानुसार कार्यकारी मंडल ने निर्णायकों के बहुमत के आधार पर अथवा सर्वसम्मति के आधार पर चयनित पुस्तकों के लिए पुरस्कारों की घोषणा की है। पुरस्कार एक जनवरी 2013 से 31 दिसंबर 2017 के दौरान पहली बार प्रकाशित पुस्तकों को दिया गया है। साहित्य अकादेमी पुरस्कार के रूप में एक उत्कीर्ण ताम्रफलक, शॉल और एक लाख रुपए की राशि प्रदान करेगी। घोषित पुरस्कार 25 फरवरी 2020 को दिल्ली में आयोजित एक विशेष समारोह (साहित्योत्सव) में दिए जाएंगे।

जनसत्ता Thu, 19 December 2019
https://epaper.jansatta.com/c/47042293

शशि थरूर और नंदकिशोर आचार्य को साहित्य अकादमी पुरस्कार

25 फरवरी को साहित्योत्सव में किया जाएगा सम्मानित

नई दिल्ली, 18 दिसम्बर (नवोदय टाइम्स) : साहित्य अकादमी ने 23 भारतीय भाषाओं के रचनाकारों को वर्ष 2019 का प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार देने की बुधवार को घोषणा की है। पुरस्कार 1 जनवरी, 2013 से 31 दिसम्बर 2017 के दौरान पहली बार प्रकाशित पुस्तकों के लिए दिया गया है।

साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने बताया कि साहित्य अकादमी पुरस्कार में एक ताम्रफलक, शॉल व एक लाख रुपए की राशि चुने गए लेखकों को प्रदान करेगी। घोषित पुरस्कार 25 फरवरी 2020 को एक विशेष साहित्योत्सव में दिए जाएंगे। श्रीनिवासराव ने बताया कि अंग्रेजी में कथेतर गद्य 'एन एरा ऑफ डार्कनेस' के लिए थरूर को साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा जाएगा। हिन्दी में नंदकिशोर आचार्य को उनके कविता संग्रह 'छीलते हुए अपने को' के लिए प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। राव के मुताबिक, 'सवनेह-सर सैयद : एक बाजदीद (जीवनी) के लिए किदवई को पुरस्कृत किया जाएगा। इसके अलावा, असमिया में जयश्री गोस्वामी महंत को 'चाणक्य' (उपन्यास), मणिपुरी में बेरिल थंगा (एल. बिरमंगल सिंह) को 'ई अमादी अदुनगीगी ईठत' (उपन्यास), तमिल में चो. धर्मन को 'सूल'(उपन्यास), और तेलुगु में बंदि नारायणा स्वामी को 'सेप्ताभूमि' (उपन्यास) के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया जाएगा। श्रीनिवासराव ने कहा कि बोडो में फुकन चन्द्र बसुमतारी को 'आखाइ आथुमनिफ्राय' (कविता),कोंकणी में निलबा आ. खांडेकार को 'द वर्ड्स' (कविता), मैथिली में कुमार मनीष अरविन्द को 'जिनगीक ओरिआओन करैत' (कविता), मलयालम में वी. मधुसूदनन नायर को 'अचन पिरन्ना वीदु' (कविता), मराठी में अनुराधा पाटील को 'कदाचित अजूनही' (कविता), संस्कृत में पेन्ना-मधुसूदनः को 'प्रज्ञाचाक्षुष्म' (कविता) के लिए प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कहानी संग्रह के लिए अब्दुल अहद हाज़िनी (कश्मीरी) को 'अख याद अख कयामत', तरुण कांति मिश्र (ओड़िया) को 'भास्वती', किरपाल कजाक (पंजाबी) को 'अंतहीन', रामस्वरूप किसान (राजस्थानी) को 'बारीक बात', काली चरण हेम्ब्रम(संथाली) को 'सिसिरजली', ईश्वर मूरजाणी (सिंधी) को 'जीजल' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

'प्रेम-कविता भी राजनीतिक हो सकती है'

75 के हो रहे नंदकिशोर आचार्य के कविता संग्रह 'छीलते हुए अपने को' केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित होना अपने आप में महत्वपूर्ण है। उनकी कविताएं नए आयाम देती रही हैं और प्रेम में भी वो राजनीति प्रभावी तरह से खोज लेते हैं। अंग्रेजी साहित्य, रंगमंच और इतिहास के विशेषज्ञ आचार्य के पंद्रह कविता-संग्रह, आठ नाटक, आठ साहित्यिक आलोचना की पुस्तकें एवं संस्कृति, शिक्षा, राजनीतिक-आर्थिक चिन्तन, मानवाधिकार एवं गांधी दर्शन पर केन्द्रित चौदह पुस्तकें उनकी समर्थता को साबित करती रही हैं। प्रकृति, प्रेम, राजनीति और मानव केंद्रित अध्यात्म को अपनी लेखन प्रक्रिया का आधार बनाकर लिखने वाले आचार्य साहित्य अकादमी पुरस्कार पाने वाले भले ही 26वें कवि हों पर उनकी प्रतिष्ठा की कतार काफी पहले की हकदार है।

आचार्य मानते हैं कि कविता को साहित्य अकादमी से पुरस्कृत करना सुखद है। हर कवि समाज को दो स्तरों पर समझने की कोशिश करता है। वर्तमान में घट रही घटनाओं को वास्तविकता में समझना एक तरीका है। लेकिन तत्काल को इतिहास और साहित्य की दृष्टि और अध्यात्म के दर्शन से समझना कवि का कर्तव्य है। उनका मानना है कि कवि की तत्वमीमांसक (मेटाफिजकल) समझ ही उसे भूत, वर्तमान और भविष्य के बीच सामंजस्य बिठाने में मदद करती है इसलिए कवि की पाठन सामग्री बहुआयामी होनी अनिवार्य है। आचार्य स्वयं उर्दू में गालिब और हिन्दी में अज्ञेय से प्रभावित रहे हैं। वरिष्ठ कवि अनामिका का मानना है कि आज हर व्यक्ति खुद से ही संवाद करना भूल गया है, वहां आचार्य की कविता इस टूटे संवाद को पुनः स्थापित करती है। जीवन और उसके तमाम रंगों से लबरेज कविताएं इस संबंध को सुलभ बनाती हैं। वरिष्ठ कला आलोचक और कवि प्रयाग शुक्ल मानते हैं कि नंदकिशोर आचार्य की कविता का स्थापत्य स्वयं कम दिलचस्प नहीं है- इसमें ठेठ गद्य की लय और गीति-तत्व का अनोखा मेल है। सामाजिक चिंतक व कवि अशोक वाजपेयी का मानना रहा है कि आचार्य की अपनी आवाज है जो ध्यान और मनन की मांग करती है। याद रखना होगा कि अनेक विधाओं में सृजनशील आचार्य पूर्व में मीरा पुरस्कार, बिहारी पुरस्कार, भुवनेश्वर पुरस्कार, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किए गए हैं। 'गाना गाता पतझड़', 'सभ्यता का विकल्प', 'अहिंसा की संस्कृतिः आधार और आयाम' समकालीन परिप्रेक्ष्य में नंदकिशोर आचार्य की महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं।

अदिति माहेश्वरी

नई दिल्ली । गुरुवार । 19 दिसंबर 2019

नया इंडिया

थरूर समेत 23 अन्य को साहित्य अकादमी पुरस्कार

नई दिल्ली ■ भाषा

साहित्य अकादमी ने हिन्दी के लिए नंदकिशोर आचार्य, अंग्रेजी के लिए सांसद डॉ शशि थरूर, उर्दू के लिए प्रो. शाफे किदवई और पंजाबी भाषा के लिए किरपाल कज़ाक समेत 23 भारतीय भाषाओं के रचनाकारों को वर्ष 2019 का प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार देने की बुधवार को घोषणा की।

एक बयान में साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने बताया कि सात कविता-संग्रह, चार उपन्यास, छह कहानी-संग्रह, तीन निबंध संग्रह, एक-एक कथेतर गद्य, आत्मकथा और जीवनी के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार घोषित किए गए है।

उन्होंने बताया कि पुरस्कारों की अनुशंसा 23 भारतीय भाषाओं की निर्णायक समितियों द्वारा की गई तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ.

चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में आयोजित अकादमी के कार्यकारी मंडल की बेठक में बुधवार को इन्हें अनुमोदित किया गया।

श्रीनिवासराव ने बताया कि अंग्रेजी में कथेतर गद्य 'एन एरा ऑफ डार्कनेस' के लिए थरूर को साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा जाएगा। थरूर कांग्रेस नेता हैं और केरल की तिरुवनंतपुरम सीट से लोकसभा सदस्य हैं।

उन्होंने बताया कि हिन्दी में नंदकिशोर आचार्य को उनके कविता संग्रह 'छीलते हुए अपने को' के लिए प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

राव के मुताबिक, 'सवनेह-सर सैयद : एक बाज़दीद (जीवनी) के लिए किदवई को पुरस्कृत किया जाएगा।

इसके अलावा, असमिया में जयश्री गोस्वामी महंत को 'चाणक्य' (उपन्यास), मणिपुरी में बेरिल थंगा (एल. बिरमंगल सिंह) को 'ई अमादी अदुनगीगी ईठत' (उपन्यास), तमिल में चो. धर्मन को 'सूल'(उपन्यास), और तेलुगु में बंदि नारायणा स्वामी को 'सेप्ताभूमि' (उपन्यास) के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया जाएगा। श्रीनिवासराव ने कहा कि बोडो में फुकन चन्द्र बसुमतारी को 'आखाइ आथुमनिफ्राय' (कविता),कोंकणी में निलबा आ. खांडेकार को 'ध वर्डस्' (कविता), मैथिली में कुमार मनीष अरविन्द को 'जिनगीक ओरिआओन करैत' (कविता), मलयालम में वी. मधुसूदनन नायर को 'अचन पिरन्ना वीदु' (कविता), मराठी में अनुराधा पाटील को 'कदाचित अजूनही' (कविता), संस्कृत में पेन्ना-मधुसूदनः को 'प्रज्ञाचाक्षुषम्' (कविता) के लिए प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कहानी संग्रह के लिए अब्दुल अहद हाज़िनी (कश्मीरी) को 'अख़ याद अख़ कयामत', तरुण कांति मिश्र (ओड़िया) को 'भास्वती', किरपाल कज़ाक (पंजाबी) को 'अंतहीन', रामस्वरूप किसान (राजस्थानी) को 'बारीक बात', काली चरण हेम्ब्रम(संथाली) को 'सिसिरजली', ईश्वर मूरजाणी (सिंधी) को 'जीजल' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

घोषणा : राजस्थानी भाषा में रामस्वरूप किसान को

नंदकिशोर आचार्य को साहित्य अकादमी अवॉर्ड

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

नई दिल्ली. साहित्य अकादमी ने बुधवार को हिंदी, संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी, उर्दू, तमिल, असमिया और राजस्थानी समेत 23 भाषाओं में अपने वार्षिक पुरस्कारों की घोषणा की। हिंदी में 2019 का प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार नंदकिशोर आचार्य को उनके कविता संग्रह 'छीलते हुए अपने को' के लिए दिया जाएगा।

उर्दू में प्रो. शाफे किदवई को 'सवनेह-ए-सर सैयद : एक बजदीद (जीवनी)' के लिए, संस्कृत में पेन्ना-मधुसूदन को 'प्रज्ञाचाक्षुषम्' के लिए और राजस्थानी में रामस्वरूप किसान को उनके कहानी संग्रह 'बारीक बात' के लिए चुना गया है।

पढ़ें **नंदकिशोर** @ पेज 02

असमिया में 'चाणक्य' के लिए चुने गए जय श्री

असमिया में जय श्री गोस्वामी को उपन्यास 'चाणक्य' के लिए, कन्नड़ में विजया को, गुजराती में रतिलाल बोरीसागर, कश्मीरी में अब्दुल अहद हाजिनी, मलयालम में मधुसूदन नायर, मणिपुरी में बेरिल, मराठी में अनुराधा पाटिल, ओड़िया में तरुण कांति, बोडो में फुकन चंद्र, डोगरी में ओम शर्मा, मैथिली में कुमार मनीष, सिंधी में ईश्वर मूरजाणी पुरस्कृत होंगे।

NBT
नवभारत टाइम्स

शशि थरूर को साहित्य अकादमी

कांग्रेस सांसद शशि थरूर को उनकी किताब 'एन एरा ऑफ डार्कनेस' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है। बुधवार को 23 भारतीय भाषाओं के रचनाकारों के लिए इस पुरस्कार की घोषणा हुई। हिंदी के लिए नंदकिशोर आचार्य, उर्दू के लिए प्रो. शाफे किदवई के नाम का ऐलान हुआ। ▶▶ पेज 13

ब्रिटिश राज पर किताब के लिए थरूर, हिंदी के लिए नंदकिशोर को साहित्य अकादमी

■ भाषा, नई दिल्ली

साहित्य अकादमी ने साल 2019 के लिए पुरस्कारों की घोषणा की। हिंदी के लिए नंदकिशोर आचार्य, अंग्रेजी के लिए सांसद शशि थरूर, उर्दू के लिए प्रो. शाफे किदवई समेत 23 भारतीय भाषाओं के रचनाकारों को प्रतिष्ठित पुरस्कार दिया जाएगा।

> उर्दू भाषा के लिए प्रो. शाफे किदवई को मिला यह सम्मान

नंदकिशोर आचार्य को उनके कविता संग्रह 'छीलते हुए अपने को' के लिए सम्मानित किया जाएगा। शशि थरूर ने 2016 में 'एन ऐरा ऑफ डार्कनेस' किताब लिखी थी। इस किताब में शशि थरूर ने भारत में ब्रिटिश राज के बारे में लिखा है, जिसमें उनपर तंज भी है।

नंदकिशोर आचार्य

शशि थरूर

किताब में 1857 की क्रांति, जलियांवाला बाग, ईस्ट इंडिया कंपनी का भारत में आना और फिर अंग्रेजों का भारत से चले जाना, पूरे किस्से के बारे में बताया गया है। बता दें कि कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शशि थरूर अभी तक कुल 19 किताबें लिख चुके हैं, जिसका जिक्र उन्होंने अपनी वेबसाइट और ट्विटर अकाउंट पर भी किया है। एन ऐरा ऑफ डार्कनेस के अलावा मैं हिंदू क्यों हूं? The Paradoxical Prime Minister, Nehru: The Invention of India जैसी किताबें शामिल हैं, जो ऐतिहासिक और राजनीतिक दृष्टि से काफी अहम हैं।

'सवनेह-सर सैयद : एक बाजदीद (जीवनी) के लिए शाफे किदवई को पुरस्कृत किया जाएगा। इसके अलावा उड़िया, कश्मीरी, असमिया, पंजाबी समेत अन्य भारतीय भाषाओं के रचनाकारों को भी पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। साहित्य अकादमी के सचिव उन्होंने कहा कि पुरस्कार एक जनवरी 2013 से 31 दिसम्बर 2017 के दौरान पहली बार प्रकाशित पुस्तकों को दिया गया है।

नई दिल्ली, लखनऊ, रायपुर और फरीदाबाद से प्रकाशित
पायनियर
www.dailypioneer.com

नंदकिशोर, थरूर समेत 23 को साहित्य अकादमी पुरस्कार

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

साहित्य अकादमी ने हिन्दी के लिए नंदकिशोर आचार्य, अंग्रेजी के लिए सांसद डॉ. शशि थरूर, उर्दू के लिए प्रो. शाफे किदवई और पंजाबी भाषा के लिए किरपाल कज़ाक समेत 23 भारतीय भाषाओं के रचनाकारों को वर्ष 2019 का प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार देने की बुधवार को घोषणा की। एक बयान में साहित्य अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने बताया कि सात कविता-संग्रह, चार उपन्यास, छह कहानी-संग्रह, तीन निबंध संग्रह, एक-एक कथेतर गद्य, आत्मकथा और जीवनी के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार घोषित किए गए है। उन्होंने बताया कि पुरस्कारों की अनुशंसा 23 भारतीय भाषाओं की निर्णायक समितियों द्वारा की गई तथा साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में आयोजित अकादमी के कार्यकारी मंडल की बैठक में बुधवार को इन्हें अनुमोदित किया गया।

निलबा खांडेकार हांकां साहित्य अकादमी पुरस्कार

एक लाख रुपया, ताम्रपत्र आनी भोवमानपत्र पुरस्काराचे स्वरूप

■ भांगरभूंय । प्रतिनिधी

पणजी : कोंकणींतले नामनेचे कवी निलबा खांडेकार हांकां तांच्या 'ध वर्डस्' ह्या कविता झेल्या खातीर अंदूंचो साहित्य अकादमी पुरस्कार जाहीर जालो. एक लाख रुपया, ताम्रपत्र आनी भोवमानपत्र अशें ह्या पुरस्काराचें स्वरूप आसा. तांणी तांचो 'ध वर्डस्' हो कविता झेलो २०१७ वर्सा उजवाडाक हाडिल्लो. वेध, सुर्यवंशी, अग्नी, ब्लॉक, दंडकारण्य आनी वादळां पयलीची शांतताय अशें स कविता झेले आनी एक नाटकाचे पुस्तक तांणी उजवाडाक हाडल्यात. गजानन जोग, मीना काकोडकार आनी प्रकाश पाडगांवकार हे साहित्य अकादमीच्या निवड समितीचेर आशिल्ले.आयच्या काळांत दर्जेदार साहित्य निर्माण जावप गरजेचें: खांडेकारफाटलीं कितलीशींच वर्सां हांव कविता बरयतां. म्हज्या ह्या कार्याचो राष्ट्रीय पांवड्यार भोवमान जावप हाची म्हाका खोशी जाता. केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार मेळप म्हणल्यार खोशयेची गजाल. 'ध वर्डस्' सारक्या विवेकी, विचारी आनी आधुनीक पुस्तकाच्या माध्यमांतल्यान कोंकणी साहित्य समाजांतल्या दरेका वाचका मेरेन पावता देखून आपल्याक चड खोस भोगता अशी प्रतिक्रिया पुरस्कारा उपरांत कवी निलबा खांडेकार हांणी उक्तायली.

कोंकणी साहित्याच्या मळार आमकां नवें साहित्यीक मेळपाक जाय. २५-३० वर्सां फाटले साहित्यीक आज लेगीत बरयतात आनी हेच साहित्यीक आमकां वेगळेवेगळे माचयेर दिश्टी पडटात. देखून तरणाट्यांनी मुखार सरून दर्जेदार साहित्य निर्माण करपाक जाय. नव्या बरोवप्यांनी मनांत सुचता तशें बरयत रावचें. कसलोच भंय बाळगिनासतना बरोवचें अशें

खांडेकार हांकां मेळिल्ले पुरस्कार

- ■ कला अकादमीचो साहित्य पुरस्कार (१९९२)
- ■ कोंकणी भाशा मंडळाचो पुरस्कार (१९९२)
- ■ कोंकणी भाशा मंडळाचो पुरस्कार (२००२)
- ■ गोवा कोंकणी अकादेमीचो साहित्य पुरस्कार (२००९)
- ■ कला अकादमीचो साहित्य पुरस्कार (२०११)
- ■ गोवा कला अकादमीचो प्रशंसा पुरस्कार (२०१६)
- ■ कोंकणी कला साहित्य केंद्राचो नाट्यलेखन पुरस्कार (२०१९)

तरणाट्यांनी मुखार सरून दर्जेदार साहित्य निर्माण करपाक जाय. जे दर्जेदार साहित्य आमकां आज पळोवपाक मेळटा ते आदल्या लेखकांनीच तिगोवन दवरलां. कारण नवें पिळगे कडेन वाचन नाशिल्ल्यान ते साहित्य रचपाक उणें पडटात. वाचन, चिंतन आनी मनन जायत जाल्यार साहित्य रचपाक आदार मेळटलो आनी साहित्याचो दर्जोय वाडटलो.

- निलबा खांडेकार

રતિલાલ બોરીસાગર, શશી થરૂર સહિત ૨૩ લેખકોને સાહિત્ય એકેડમી એવોર્ડ જાહેર

નવી દિલ્હીઃ કોંગ્રેસના સિનિયર નેતા શશી થરૂર અને નાટ્ય લેખક નંદકિશોર આચાર્યને ૨૦૧૯નો પ્રતિષ્ઠિત સાહિત્ય અકાદમીનો એવોર્ડ મળ્યો છે. કુલ ૨૩ લેખકોને એવોર્ડ જાહેર થયા છે.નેશનલ એકેડમીએ બુધવારે વિજેતાના નામ જાહેર કર્યા હતા. શશી થરૂરને તેમના પુસ્તક 'એરા ઓફ ડાર્કનેશ' માટે એવોર્ડ અપાયો છે.નંદકિશોર આચાર્યને હિન્દી કાવ્યનું પુસ્તક 'ચિલ્લાતે હુએ અપને કો' માટે એવોર્ડ જાહેર થયો હતો. આ પ્રતિષ્ઠિત એવોર્ડ માટે ગુજરાતના લેખક રતિલાલ બોરીસાગરની પણ પસંદગી થઈ છે. વિજેતાને નકસીદાર તાંબાની પ્લેટ અને રૂ. એક લાખનું રોકડ ઈનામ ૨૫, ફેબ્રુઆરીએ એક વિશેષ સમારોહમાં એનાયત થશે. (પીટીઆઈ)■

दैनिक भास्कर
19-Dec-2019
Page 15

राजस्थान के दो साहित्यकारों को केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार

साहित्य जगत में खास पहचान रखती हैं नंदकिशोर आचार्य की कविता और रामस्वरूप किसान की कहानियां

अनूठी कविताओं का संग्रह है आचार्य की पुस्तक 'छीलते हुए अपने को'

भास्कर न्यूज़ | बीकानेर/नोहर (हनुमानगढ़)

केन्द्रीय साहित्य अकादमी के बुधवार को घोषित वार्षिक पुरस्कारों में हिन्दी का पुरस्कार बीकानेर के डा.नंदकिशोर आचार्य को काव्य संग्रह 'छीलते हुए अपने को' पर दिया गया है। 75 वर्षीय डा.नंदकिशोर आचार्य का यह पुरस्कृत कविता संग्रह 'छीलते हुए अपने को' वर्ष 2013 में प्रकाशित हुआ था। नाटककार, कवि, चिंतक डा.नंदकिशोर आचार्य को गांधीवादी विचारक के साथ मानवाधिकारों का प्रखर पक्षधर माना जाता है।

गांधी पर लिखा उनका नाटक 'बापू' और 'मानवाधिकार के आयाम' पुस्तकें इस लिहाज से काफी प्रशंसित हुई हैं। इससे पहले उन्हें मीरा, बिहारी, भुवालका, भुवनेश्वर, केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी सहित कई प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले हैं। दुनिया भर में अपनी तरह का पहला 'अहिंसा का विश्वकोश' लिख चुके डा.आचार्य को हाल जयपुर की प्राकृत भारती ने 'अहिंसा शांति ग्रंथमाला' के संपादक की जिम्मेवारी दी है। डा. नंदकिशोर आचार्य ने 'बुरा तो नहीं मानोगे, यदि मुझे अब तुम्हारी बांसुरी बने रहना स्वीकार नहीं..' कविता से समूचे हिंदी जगत का ध्यान खींचकर हिंदी के साहित्य पटल पर अपनी खास पहचान बनाई थी।

डॉ. नंदकिशोर की पुरस्कृत पुस्तक 'छीलते हुए अपने को' से कविता के अंश :

क्या करे कवि..

इस तरह बदलता है
दुख
ताकत में
कविता होकर
क्या करे कवि अब-
ताकत जितनी जुटायेगा
दुख उतना उठायेगा

स्मृति...

कुतरती रहती है वह
मुझे-
अपने कुतरे जाने को ही
जीता रहता हूं सदा
क्या फर्क पड़ता है
खुद स्मृति कुतरे मुझे
या भविष्य कोई
कुतरा हुआ स्मृति से

मार्मिक लघुकथाओं का संग्रह है किसान की पुस्तक 'बारीक बात'

केंद्रीय अकादमी का राजस्थानी भाषा पुरस्कार इस वर्ष हनुमानगढ़ के परलीका के साहित्यकार रामस्वरूप किसान को उनके लघुकथा संग्रह 'बारीक बात' पर दिया गया है। पुरस्कृत कथा संग्रह 'बारीक बात' में उनकी छोटी-छोटी मर्मस्पर्शी कहानियों को शामिल किया गया है। 65 वर्षीय साहित्यकार रामस्वरूप किसान की गिनती वर्तमान दौर के प्रमुख कहानीकारों में होती है। रामस्वरूप किसान की अब तक एक दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उन्हें साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार, राजस्थानी भाषा-साहित्य एवं संस्कृति अकादमी का मुरलीधर व्यास राजस्थानी कथा पुरस्कार व कथा-दिल्ली का कथा पुरस्कार सहित अनेक मान-सम्मान मिल चुके हैं। किसान की कहानियां माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, विद्यापीठ यूनिवर्सिटी उदयपुर, महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी कोट्टायम-केरल के पाठ्यक्रमों में पढ़ाई जाती हैं। उनकी कहानी 'दलाल' को नब्बे के दशक में भारतीय भाषाओं की 11 सर्वश्रेष्ठ कहानियों में शामिल किया जा चुका है।

दैनिक भास्कर
19-Dec-2019
Page 4

23 वर्ष राजस्थान में ऐतिहासिक सफलता के
बीकानेर फ्रंट पेज
दैनिक भास्कर, बीकानेर, गुरुवार, 19 दिसंबर, 2019
dainikbhaskar.com 02

बुरा तो नहीं मानोगे..' अज्ञेय के चौथे सप्तक के कवि डॉ.नंदकिशोर आचार्य को 'छीलते हुए अपने को' पुस्तक पर अकादमी सम्मान

कल्चरल रिपोर्टर | बीकानेर

**'बुरा तो नहीं मानोगे
यदि मुझे अब तुम्हारी
बांसुरी बने रहना स्वीकार नहीं..'**

कविता से समूचे हिंदी जगत का ध्यान खींचकर हिंदी के साहित्य पटल पर अपनी खास पहचान बना अज्ञेय के चौथे सप्तक में जगह बनाने वाले कवि डॉ.नंदकिशोर आचार्य के कविता संग्रह 'छीलते हुए अपने को' पर अकादमी अवार्ड घोषित किया गया है। आजादी के बाद वर्ष 1955 से अकादमी ये अवार्ड दे रही है। यह पहला मौका है जब राजस्थान के किसी हिंदी कवि को यह अवार्ड मिला है। मीरा, बिहारी, भुवालका, केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी सहित देश के लगभग सभी ख्यातिप्राप्त अवार्ड ले चुके डा.आचार्य की पहचान उस चिंतक के रूप में है जो सिर्फ कविता, नाटक, निबंध लिखने तक सीमित न होकर मानवता के सामने मौजूद हर संकट-समस्या पर विमर्श करते हैं। समाधान ढूंढते हैं। आज के दौर की हिंसा और अव्यवस्थाओं में से अधिकांश का समाधान वे गांधी में तलाशते हैं। 75वर्ष के डॉ.आचार्य कोरे गांधीवादी या गांधी प्रशंसक होने की बजाय अलग गांधीदृष्टि की बात करते हैं। प्रस्तुत हैं इस मौके पर पुरस्कृत पुस्तक की कुछ कविताएं और डा.आचार्य से मौके-ब-मौके हुई बातचीत के कुछ अंश:-

कुछ बातें, कुछ कविताएं... राजस्थान के साहित्यकार को पहली बार यह पुरस्कार

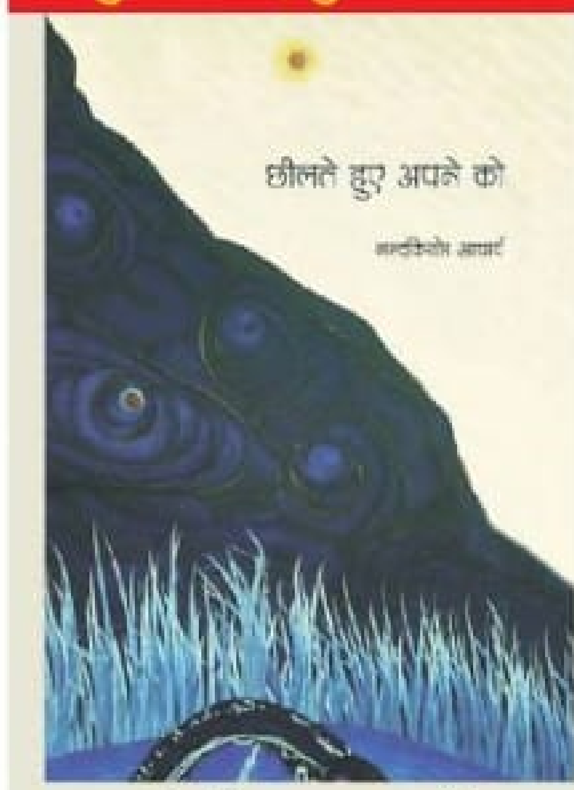

क्या करे कवि...

इस तरह बदलता है
दुख
ताकत में
कविता होकर
क्या करे कवि अब-
ताकत जितनी जुटायेगा
दुख उतना उठायेगा

स्मृति ..

कुतरती रहती है वह
मुझे-
अपने कुतरे जाने को ही
जीता रहता हूं सदा
क्या फर्क पड़ता है
खुद स्मृति कुतरे मुझे
या भविष्य कोई
कुतरा हुआ स्मृति से

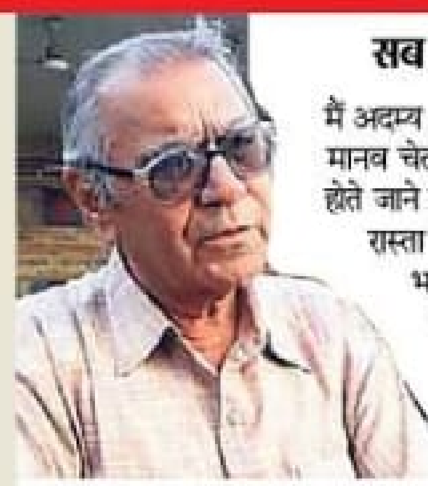

सब अच्छा होगा..

मैं अदम्य आशावादी हूं जो
मानव चेतना के निरंतर विकसित
होते जाने में विश्वास करता हूं।
रास्ता लंबा हो सकता है और
भटकावों भरा भी लेकिन
यदि मनुष्य में विकास
प्रक्रिया जारी है तो
अंतत मंजिल वही
(गांधीदृष्टि) होगी।

- 1955 से अब तक राजस्थान के किसी साहित्यकार को पहली बार मिला है यह पुरस्कार।
- 25 फरवरी को दिल्ली में होने वाले समारोह में मिलेगा पुरस्कार।
- हिंदी अवार्ड चयन के निर्णायकों में लीलाधर जगूड़ी, नंद भारद्वाज, रतन कुमार पांडेय शामिल।
- राजस्थानी के निर्णायकों में अर्जुनदेव चारण, अंबिकादत्त चतुर्वेदी, सी.एल. सांखला शामिल

गांधीवाद, गांधीगिरी से अलग है गांधीदृष्टि

गांधीगिरी पोपुलर किस्म का फिल्मी चुटकुला है। मैं गांधीवाद की भी नहीं गांधी दृष्टि की बात करता हूं। जहां कहीं भी हिंसा या दूसरा अर्थ है अन्याय है तो उसका न्यायपूर्ण तरीके से प्रतिरोध करें। सवाल न गांधी का है न गांधीवाद का। सवाल यह है कि क्या प्रत्येक मनुष्य अपने स्वातंत्र्य को अनुभव कर सकता है, दूसरे के स्वातंत्र्य को क्षति पहुंचाए बिना। यही गांधी है। यदि हम इसे स्वीकार नहीं करते तो शायद अपने को ही स्वीकार नहीं करते।

जहां मानवाधिकारों का हनन, वहां लोकतंत्र नहीं..

सामान्यतया हम लोग बहुमत तंत्र को लोकतंत्र कह देते हैं। यह ठीक है कि काम चलाऊ तौर पर कुछ निर्णय लेने होते हैं और वे बहुमत से लिए जाएंगे लेकिन जहां भी मानवाधिकारों का हनन होता हो उसे लोकतंत्र नहीं कहा जा सकता। चाहे अनौपचारिक रूप से हम उसे लोकतंत्र कहते रहें। कोई भी बहुमत किसी अल्पमत के अस्तित्व, गरिमा और उनकी आकांक्षाओं का उचित सम्मान न करता हो वह लोकतंत्र नहीं है।

हिंसा और उसकी चिंता : समाज में हिंसा रही है। उसका अहिंसक प्रतिरोध होता रहा है। कभी-कभी कुछ ऐसी परिस्थितियां बनती हैं जब सत्ता से जुड़े लोग या प्रभावशाली तबके आक्रामक भाषा बोलने लगते हैं या अन्य की स्वतंत्रता पर आघात करते हैं तो चिंता बढ़ जाती है। कोई भी लोकतांत्रिक समाज हिंसक कैसे हो सकता है?

लोक के बीज से आधुनिक राजस्थानी कहानी उगा दी 'किसान' ने, 'बारीक बात' पर अकादमी अवार्ड

अकादमी अवार्ड घोषित होने के बाद बोले रामस्वरूप किसान, लोक से जुड़े रचनाकार जो प्रभाव पैदा करते हैं वैसा आयातित भाव से नहीं होता

रामस्वरूप किसान

बीकानेर | साहित्यकार रामस्वरूप किसान के राजस्थानी कहानी संग्रह 'बारीक बात' पर इस वर्ष का साहित्य अकादमी पुरस्कार घोषित हुआ है। एक दर्जन से अधिक किताबें लिख चुके परलीका-हनुमानगढ़ के किसान की यह तीसरा कहानी संग्रह हैं। वे इसे अपनी कहानी का भी तीसरा पड़ाव ही मानते हैं। कहते हैं, चौथा पड़ाव भी आएगा लेकिन जब कहानी दिल से निकलेगी। पांच साल हो गए, कोई नहीं कहानी नहीं लिखी। जो लिख चुका हूं उन्हीं को लिखना यानी राजस्थानी में 'पीस्योड़े नै पीसणो' है। भास्कर से बातचीत में कहा, जिस जगह लोक समृद्ध होगा वहां की हर कला समृद्ध होगी। राजस्थानी में बात की पुरानी परंपरा रही है। कहानी कहने-सुनने की इस परंपरा से ही कहानी आगे बढ़ी है। यही वजह है कि यहां की कहानी कहीं भी हिंदी से कमतर नहीं है। यह तय है कि लोक से जुड़े रचनाकार की कला में जो प्रभाव होगा वह आयातित भाव वाले कलाकारों में नहीं मिलेगा। मेरा मानना है कि यूरोप में भी लोक काफी समृद्ध रहा है इसलिए वहां की कहानी शिल्प, कथानक और वैविध्य के लिहाज से इतनी विकसित हुई है।

दैनिक भास्कर
19-Dec-2019
Page 5

दो राजस्थानियों को मिला साहित्य अकादमी पुरस्कार, हिंदी में पहली बार हासिल

डॉ. नंदकिशोर

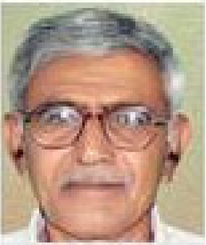
रामस्वरूप

जयपुर | साहित्य अकादमी ने बुधवार को 23 भाषाओं में साहित्य पुरस्कारों की घोषणा की। दो राजस्थानियों बीकानेर के डॉ. नंदकिशोर आचार्य व हनुमानगढ़ के रामस्वरूप किसान को यह पुरस्कार मिलेगा। आचार्य ने हिंदी भाषा में काव्य 'छीलते हुए अपने को' तथा किसान ने राजस्थानी भाषा में 'बारीक बात' के लिए यह पुरस्कार जीता। 1955 से शुरू इस पुरस्कार को पहली बार किसी राजस्थानी ने हिंदी भाषा में जीता। कांग्रेस नेता शशि थरूर को अंग्रेजी भाषा में पुरस्कार मिलेगा। -पेज 11 भी पढ़ें

दैनिक भास्कर
19-Dec-2019
Page 3

दो राजस्थानियों को साहित्य अकादमी पुरस्कार, हिंदी में पहली बार हासिल

डॉ.नंदकिशोर आचार्य को कविता संग्रह 'छीलते हुए अपने को' पर सर्वोच्च हिन्दी सम्मान

बीकानेर| दिल्ली की केन्द्रीय साहित्य अकादमी ने बुधवार को 23 भाषाओं में अपने वार्षिक पुरस्कार घोषित किए जिनमें हिन्दी का पुरस्कार बीकानेर के डा.नंदकिशोर आचार्य को काव्य संग्रह 'छीलते हुए अपने को' पर दिया गया है। वर्ष 1955 से इन पुरस्कारों की शुरुआत हुई है तब से यह पहला मौका है जब राजस्थान के किसी हिन्दी साहित्यकार को यह पुरस्कार दिया है। शेष| पेज 08 पर

डॉ. नंदकिशोर

(बीकानेर फ्रंट पेज भी देखें)

कहानीकार रामस्वरूप किसान की 'बारीक बात' को अकादमी का राजस्थानी भाषा अवार्ड

परलीका-हनुमानगढ़ के 65 वर्षीय रामस्वरूप किसान की गिनती वर्तमान दौर के प्रमुख कहानीकारों में होती है। एक दर्जन से अधिक पुस्तकें लिख चुके किसान की कहानियां माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, विद्यापीठ यूनिवर्सिटी उदयपुर, महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी कोट्टायम-केरल के पाठ्यक्रमों में पढ़ाई जाती हैं। उनकी कहानी 'दलाल' को नब्बे के दशक में भारतीय भाषाओं की 11 सर्वश्रेष्ठ कहानियों में शामिल किया जा चुका है। पुरस्कृत कथा संग्रह 'बारीक बात' में उनकी छोटी-छोटी मर्मस्पर्शी कहानियों को शामिल किया है।

रामस्वरूप